

32. सो उस शख्स से बढ कर ज़ालिम कौन है जो अल्लाह पर झूट बांधे और सच को झुटलाए जबकि वोह उसके पास आ चुका हो, क्या काफ़िरों का ठिकाना दोज़ख़में नहीं है?

33. और जो शख्स सच ले कर आया और जिसने उसकी तस्दीक़ की वोही लोग ही तो मुत्तकी हैं।

34. उन के लिए वोह (सब ने'अमतें) उनके रबके पास (मौजूद) हैं जिनकी वोह ख़्वाहिश करेंगे, येही मोहसिनों की जज़ा है।

35. ताकि अल्लाह उनकी खताओं को जो उन्होंने कीं उनसे दूर कर दे और उन्हें उनका सवाब उन नेकियों के बदले में अ़ता फ़रमाए जो वोह किया करते थे।

36. क्या अल्लाह अपने बंदे (मुकर्रब नबिये मुकर्रम ﷺ) को काफ़ी नहीं है? और येह (कुफ़ार) आपको अल्लाह के सिवा उन बुतों से (जिनकी येह पूजा करते हैं) डराते हैं, और जिसे अल्लाह (उसके कुबूले हक़ से इन्कार के बाइस) गुमराह ठेहरा दे तो उसे कोई हिदायत देनेवाला नहीं।

37. और जिसे अल्लाह हिदायत से नवाज़ दे तो उसे कोई गुमराह करनेवाला नहीं। क्या अल्लाह बड़ा गालिब, इन्तिक़ाम लेने वाला नहीं है।

38. और अगर आप उनसे दर्याफ़्त फ़रमाएं कि आस्मानों और ज़मीन को किसने पैदा किया तो वोह ज़रूर कहेंगे अल्लाहने, आप फ़रमा दीजिए: भला येह बताओ कि जिन बुतों को तुम अल्लाहके सिवा पूजते हो अगर अल्लाह मुझे कोई तकलीफ़ पहुंचाना चाहे तो क्या वोह (बुत) उसकी

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى

اللَّهِ وَكَذَّبَ بِالصِّدْقِ إِذْ جَاءَهُ ۗ

أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكَافِرِينَ ۝۳۲

وَالَّذِينَ جَاءُوا بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ

بِهِ أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ ۝۳۳

لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۗ

ذَٰلِكَ جَزَاُ الْمُحْسِنِينَ ۝۳۴

لِيُكَفِّرَ اللَّهُ عَنْهُمْ أَسْوَأَ الَّذِي

عَمِلُوا وَيَجْزِيَهُمْ أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ

الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝۳۵

أَلَيْسَ اللَّهُ بِكَافٍ عَبْدًا ۗ وَ

يُخَوِّفُونَكَ بِالَّذِينَ مِنْ دُونِهِ ۗ

مَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ۝۳۶

وَمَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ مُضِلٍّ ۗ

أَلَيْسَ اللَّهُ بِعَزِيزٍ ذِي انْتِقَامٍ ۝۳۷

وَلَيْنِ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ

وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ۗ قُلْ

اَفَرَعَيْتُمْ مَا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ

اللّٰهِ اِنْ اَرَادَنِي اللّٰهُ بِضُرٍّ هَلْ

(भेजी हुई) तकलीफ़ को दूर कर सकते हैं या वोह मुझे रहमत से नवाज़ना चाहे तो क्या वोह (बुत) उसकी (भेजी हुई) रहमत को रोक सकते हैं, फ़रमा दीजिए : मुझे अल्लाह काफ़ी है, उसी पर तवक्कल करनेवाले भरोसा करते हैं।

39. फ़रमा दीजिए : ऐ (मेरी) कौम तुम अपनी जगह अमल किए जाओ में (अपनी जगह) अमल कर रहा हूँ, फिर अज़ाब तुम (अंजाम को) जान लोगे।

40. (कि) किस पर अज़ाब आता है जो उसे रुस्वा कर देगा और उस पर हमेशा काइम रेहनेवाला अज़ाब उतरेगा।

41. बेशक हमने आप पर लोगों (की रहनुमाई) के लिए हक्क के साथ किताब उतारी, सो जिसने हिदायत पाई तो अपने ही फ़ाइदे के लिए और जो गुमराह हुआ तो अपने ही नुक़सान के लिए गुमराह हुआ और आप उनके जिम्मेदार नहीं हैं।

42. अल्लाह जानों को उनकी मौत के वक़्त क़ब्ज़ कर लेता है और उन (जानों) को जिन्हें मौत नहीं आई है उनकी नींद की हालत में, फिर उनको रोक लेता है जिन पर मौत का हुक्म सादिर हो चुका हो और दूसरी (जानों) को मुक़र्ररा वक़्त तक छोड़े रखता है। बेशक उसमें उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो ग़ौरो फ़िक्क करते हैं।

43. क्या उन्होंने अल्लाह के इज़्ज़ के खिलाफ़ (बुतों को) सिफ़ारशी बना रखा है, फ़रमा दीजिए : अगरचे वोह किसी चीज़ के मालिक भी न हों और जी अक्ल भी न हों।

هُنَّ كَشِفَتْ ضُرّاً أَوْ أَرَادَنِي  
بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُسِكَتُ رَحْمَتِي  
قُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ  
الْمُتَوَكِّلُونَ ﴿٣٨﴾

قُلْ يَقَوْمِ اعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ  
إِنِّي عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٣٩﴾

مَنْ يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَيَحِلُّ  
عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ﴿٤٠﴾

إِنَّا أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ لِلنَّاسِ  
بِالْحَقِّ ۚ فَمَنْ اهْتَدَىٰ فَلِنَفْسِهِ  
وَمَنْ ضَلَّ فَاتَّبِعْهَا ۚ وَ  
مَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيلٍ ﴿٤١﴾

اللَّهُ يَتَوَكَّلُ عَلَىٰ الْإِنْسَانِ حِينَ مَوْتِهَا  
وَالَّتِي لَمْ تَمُتْ فِي مَنَامِهَا  
فَيُمْسِكُ الَّتِي قَضَىٰ عَلَيْهَا الْمَوْتَ  
وَيُرْسِلُ الْأُخْرَىٰ إِلَىٰ أَجَلٍ  
مُّسَمًّى ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ  
يَتَفَكَّرُونَ ﴿٤٢﴾

أَمْ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ  
شُفَعَاءَ ۗ قُلْ أَوْ لَوْ كَانُوا لَا  
يَمْلِكُونَ شَيْئًا وَلَا يَعْقِلُونَ ﴿٤٣﴾

44. फ़रमा दीजिए : सब शफ़ाअत (का इज़न) अल्लाह ही के इख़्तियार में है (जो उसने अपने मुकर्रबीन के लिए मख़सूस कर रखा है), आस्मानों और ज़मीन की सल्लतनत भी उसी की है, फिर तुम उसी की तरफ़ लौटाए जाओगे।

45. और जब तन्हा अल्लाह ही का जिक्र क्या जाता है तू उन लोगों के दिल घुटन और कराहट का शिकार हो जाते हैं जो आख़िरत पर यकीन नहीं रखते, और जब अल्लाह के सिवा उन बुतों का जिक्र किया जाता है (जिन्हें वोह पूजते हैं) तो वोह अचानक ख़ूश हो जाते हैं।

46. आप अर्ज कीजिए : ऐ अल्लाह ! आस्मानों और ज़मीन को अदम से वजूद में लाने वाले, ग़ैब और ज़ाहिर का इल्म रखने वाले, तू ही अपने बंदों के दरमियान उन (उमूर) का फैसला फ़रमाएगा जिनमें वोह इख़्तिलाफ़ किया करते थे।

47. और अगर ज़ालिमों को वोह सबका सब (मालो मताअ) मुयस्सर हो जाए जो रूए ज़मीनमें है और उसके साथ उसके बराबर (और भी मिल जाए) तो वोह उसे क़ियामत के दिन बुरे अज़ाब (से नजात पाने) के बदले में दे डालेंगे, और अल्लाह की तरफ़ से उन के लिए वोह (अज़ाब) ज़ाहिर होगा जिसका वोह गुमान भी नहीं करते थे।

48. और उनके लिए वोह (सब) बुराइयां ज़ाहिर हो जाएंगी जो उन्होंने कमा रखी हैं और उन्हें वोह (अज़ाब) घेर लेगा जिसका वोह मज़ाक़ उडाया करते थे।

49. फिर जब इन्सानको कोई तक्लीफ़ पहुंचती है तो हमें पुकारता है फिर जब हम उसे अपनी तरफ़से कोई ने'अमत

قُلْ لِلّٰهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيعًا ۗ لَهُ  
مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ ثُمَّ  
اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٣٤﴾

وَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَحْدَهُ اشْمَاَزَتْ  
قُلُوْبُ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ  
بِالْاٰخِرَةِ ۗ وَ اِذَا ذُكِرَ الَّذِيْنَ مِنْ  
دُوْنِهِ اِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿٣٥﴾

قُلِ اللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَ  
الْاَرْضِ عَلِمِ الْغَيْبِ وَ الشَّهَادَةِ  
اَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِىْ مَا  
كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿٣٦﴾

وَلَوْ اَنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَا فِى  
الْاَرْضِ جَمِيعًا وَّ مِثْلَهُ مَعَهُ  
لَافْتَدَوْا بِهٖ مِنْ سُوْءِ الْعَذَابِ  
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ وَ بَدَّلَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ  
مَا لَمْ يَكُوْنُوْا يَحْتَسِبُوْنَ ﴿٣٧﴾

وَ بَدَّلَهُمْ سَيِّاٰتِ مَا كَسَبُوْا وَاَحَاقَ  
بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِسِتْرِئْرُوْنَ ﴿٣٨﴾

فَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَا نَآءَ  
ثُمَّ اِذَا خَوَّلَهُ نِعْمَةً مِّمَّا لَآ قَالَ

बख़्शा देते हैं तो कहने लगता है कि यह ने'मत तो मुझे (मेरे) इल्मो तदबीर (की बिना) पर मिली है, बल्कि यह आजमाइश है मगर उनमेंसे अक्सर लोग नहीं जानते।

50. फिल वाक़े' यह (बातें) वोह लोग भी किया करते थे जो उनसे पहले थे, सो जो कुछ वोह कमाते रहे उनके किसी काम न आ सका।

51. तो उन्हें वोह बुराइयां आ पहुंचीं जो उन्होंने कमा रखी थीं, और उन लोगों में से जो जुल्म कर रहे हैं उन्हें (भी) अज़ क़रीब वोह बुराइयां आ पहुंचेंगी जो उन्होंने ने कमा रखी हैं और वोह (अल्लाह को) आजिज़ नहीं कर सकते।

52. और क्या वोह नहीं जानते कि अल्लाह जिस के लिए चाहता है रिज़्क कुशादा फ़रमा देता है और (जिस के लिए चाहता है) तंग कर देता है, बेशक उसमें ईमान रखनेवालों के लिए निशानियां हैं।

53. आप फ़रमा दीजिए : ऐ मेरे वोह बन्दो ! जिन्होंने अपनी जानों पर ज़ियादती कर ली है, तुम अल्लाह की रहमत से मायूस न होना, बेशक अल्लाह सारे गुनाह मुआफ़ फ़रमा देता है, वोह यकीनन बड़ा बख़्शानेवाला, बहुत रहम फ़रमानेवाला है।

54. और तुम अपने रब की तरफ़ तौबा-व-इनाबत इख़्तियार करो और उसकी इताअत गुज़ार बन जाओ क़ब्ल इसके कि तुम पर अज़ाब आ जाए फिर तुम्हारी कोई मदद नहीं की जाएगी।

55. और इस बेहतरीन (किताब) की पैरवी करो जो तुम्हारे रबकी तरफ़ से तुम्हारी जानिब उतारी गई है क़ब्ल

إِنَّمَا أُوتِيْتُهُ عَلَىٰ عِلْمٍ ۖ بَلْ هِيَ  
فِتْنَةٌ وَلَكِن لَّا كُتِرْهُمْ لَآ يَعْلَمُونَ ﴿٥٩﴾

قَدْ قَالَهَا الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَمَا  
أَعْلَىٰ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٥٠﴾

فَأَصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا ۖ  
وَ الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْ هَٰؤُلَاءِ  
سَيُصِيبُهُمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا ۗ  
وَمَا هُمْ بِمُعْجِزِينَ ﴿٥١﴾

أَوَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ  
الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۗ إِنَّ  
فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٢﴾

قُلْ لِيُعَادِيَ الَّذِينَ أَسْرَفُوا عَلَىٰ  
أَنفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوا مِنْ رَّحْمَةِ  
اللَّهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ  
جَبِيحًا ۗ إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿٥٣﴾

وَ أَنْبِئُوا إِلَىٰ رَبِّكُمْ وَ اسْلُبُوا لَهُ  
مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ  
لَا تُنصَرُونَ ﴿٥٤﴾

وَ اتَّبِعُوا أَحْسَنَ مَا أُنزِلَ  
إِلَيْكُمْ مِنْ رَبِّكُمْ ۖ مِنْ قَبْلِ أَنْ



इसके कि तुम पर अचानक अज़ाब आ जाए और तुम्हें ख़बर भी न हो।

56. (ऐसा न हो) के कोई शख्स केहने लगे : हाए अफ़सोस ! उस कमी और कोताही पर जो मैं ने अल्लाह के हक्के (ताअत) मैं की और मैं यकीनन मजाक़ उड़ाने वालों में से था।

57. या केहने लगे कि अगर अल्लाह मुझे हिदायत देता तो मैं ज़रूर परहेज़गारों में से होता।

58. या अज़ाब देखते वक़्त केहने लगे कि अगर एकबार मेरा दुनिया में लौटना हो जाए तो मैं नैक़कारों में से हो जाऊं।

59. (रब फ़रमाएगा :) हां ! बेशक मेरी आयतें तेरे पास आई थीं, सो तूने उन्हें झुटला दिया, और तूने तकबुर किया और तू काफ़िरों में से हो गया।

60. और आप क़ियामत के दिन उन लोगों को जिन्होंने अल्लाह पर झूट बोला है देखेंगे कि उनके चेहरे सियाह होंगे, क्या तकबुर करनेवालों का ठिकाना दोज़ख़में नहीं है।

61. और अल्लाह ऐसे लोगों को जिन्होंने परहेज़गारी इख़्तियार की है उनकी काम्याबी के साथ नजात देगा न उन्हें कोई बुराई पहुंचेगी और न ही वोह गुमगीन होंगे।

62. अल्लाह हर चीज़का ख़ालिक है और वोह हर चीज़ पर निगेहबान है।

يَأْتِيَكُمْ الْعَذَابُ بَغْتَةً وَ  
أَنْتُمْ لَا تَشْعُرُونَ ٥٥

أَنْ تَقُولَ نَفْسٌ يُحَسِرُنِي عَلَى مَا  
فَرَّطْتُ فِي جَنْبِ اللَّهِ وَإِنْ كُنْتُ  
لَمِنَ السَّخِرِينَ ٥٦

أَوْ تَقُولَ لَوْ أَنَّ اللَّهَ هَدَانِي لَكُنْتُ  
مِنَ السَّائِقِينَ ٥٧

أَوْ تَقُولَ حِينَ تَرَى الْعَذَابَ  
لَوْ أَنَّ لِي كَرَّةً فَأَكُونَ مِنَ  
الْمُحْسِنِينَ ٥٨

بَلَى قَدْ جَاءَتْكَ آيَاتِي فَكَذَّبْتَ  
بِهَا وَاسْتَكْبَرْتَ وَ كُنْتَ مِنَ  
الْكَافِرِينَ ٥٩

وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ تَرَى الَّذِينَ كَذَبُوا  
عَلَى اللَّهِ وُجُوهُهُمْ مُسْوَدَّةً أَلَيْسَ  
فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِينَ ٦٠

وَ يُنَبِّئُ اللَّهُ الَّذِينَ اتَّقَوْا  
بِمَفَازَتِهِمْ لَا يَسْسُهُمُ السُّوءُ وَلَا  
هُمْ يَحْزَنُونَ ٦١

اللَّهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَ هُوَ عَلَى  
كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ٦٢

63. उसी के पास आस्मानों और ज़मीन की कुंजियां हैं, और जिन लोगों ने अल्लाहकी आयतों के साथ कुफ़ किया वही लोग ही ख़सारा उठानेवाले हैं।

64. फ़रमा दीजिए : ऐ जाहिलो ! क्या तुम मुझे ग़ैरुल्लाह की परस्तिश करने का केहते हो।

65. और फ़िल हकीकत आपकी तरफ़ (येह) वही की गई है और उन (पयग़म्बरों) की तरफ़ (भी) जो आपसे पहले (मबक़स हुए) थे कि (ऐ इन्सान ! ) अगर तूने शिर्क किया तो यकीनन तेरा अमल बरबाद हो जाएगा और तू ज़रूर नुक़सान उठानेवालों में से होगा।

66. बल्कि तू अल्लाह की इबादत कर और शुक़गुजारों में से होजा।

67. और उन्होंने अल्लाह की क़द्रो ता'ज़ीम नहीं की जैसे उसकी क़द्रो ता'ज़ीम का हक़ था और सारे की सारी ज़मीन क़ियामत के दिन उसकी मुठ्ठी में होगी और सारे आस्मानी कुर्रें उसके दाएं हाथ (या'नी कब्ज़ए कुदरत) में लिपटे हूए होंगे, वोह पाक है और हर उस चीज़ से बुलंदो बरतर है जिसे येह लोग शरीक ठेहराते हैं।

68. और सूर फ़ूका जाएगा तो सब लोग जो आस्मानों में हैं और जो ज़मीन में हैं बेहोश हो जाएंगे सिवाए उसके जिसे अल्लाह चाहेगा, फिर उसमें दूसरा सूर फ़ूका जाएगा, सो वोह सब अचानक देखते हूए खडे हो जाएंगे।

69. और ज़मीने (मेहशर) अपने रबके नूरसे चमक

لَهُ مَقَالِيدُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ  
وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ أُولَئِكَ  
هُمُ الْخَسِرُونَ ﴿٦٣﴾

قُلْ أَفَعَيِّرُ اللَّهَ تَأْمُرُونَنِي أَنْ أَعْبُدَ  
أَيُّهَا الْجَاهِلُونَ ﴿٦٤﴾

وَلَقَدْ أُوحِيَ إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ  
مِنْ قَبْلِكَ لَئِنْ أَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ  
عَمَلُكَ وَلَتَكُونَنَّ مِنَ الْخَسِرِينَ ﴿٦٥﴾

بَلِ اللَّهِ فاعْبُدْ وَكُنْ مِنَ  
الشَّاكِرِينَ ﴿٦٦﴾

وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَتَّى قَدَرُوا  
وَالْأَرْضَ جَمِيعًا مَبْصُتَةً يَوْمَ  
الْقِيَامَةِ وَالسَّمَوَاتُ مَطْوِيَّاتٌ  
بِيَمِينِهِ ۗ سُبْحٰنَهُ وَتَعَالَى عَمَّا  
يُشْرِكُونَ ﴿٦٧﴾

وَنُفُخَ فِي الصُّورِ فَصَعِقَ مَنْ فِي  
السَّمَوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ إِلَّا  
مَنْ شَاءَ اللَّهُ ۗ ثُمَّ نُفِخَ فِيهِ  
أُخْرَىٰ فَإِذَا هُمْ قِيَامٌ يَنْظُرُونَ ﴿٦٨﴾

وَأَشْرَقَتِ الْأَرْضُ بِنُورِ رَبِّهَا

उठेगी और (हर एक के आ'माल की) किताब रख दी जाएगी और अंबिया को और गवाहों को लाया जाएगा और लोगों के दरमियान हक्को इन्साफ़ के साथ फ़ैसला कर दिया जाएगा और उन पर कोई जुल्म नहीं किया जाएगा।

70. और हर शख्स को उसके आ'माल का पूरा पूरा बदला दिया जाएगा और वोह ख़ूब जानता है जो कुछ वोह करते हैं।

71. और जिन लोगों ने कुफ़्र किया है वोह दोज़ख़की तरफ़ गिरोह दर गिरोह हाँके जाएंगे, यहां तक कि जब वोह उस (जहन्नम) के पास पहुंचेंगे तो उसके दरवाजे खोल दिए जाएंगे और उसके दारोगा उनसे कहेंगे : क्या तुम्हारे पास तुम ही में से रसूल नहीं आए थे जो तुम पर तुम्हारे रबकी आयात पढ़ कर सुनाते थे और तुम्हें इस दिनकी पेशी से डराते थे ? वोह (दोज़ख़ी) कहेंगे : हां (आए थे), लेकिन काफ़िरों पर फ़रमाने अज़ाब साबित हो चुका होगा।

72. उनसे कहा जाएगा : दोज़ख़के दरवाजों में दाख़िल हो जाओ, (तुम) उसमें हमेशा रहेनेवाले हो, सो गुरूर करनेवालों का ठिकाना कितना बुरा है।

73- और जो लोग अपने रबसे डरते रहे उन्हें (भी) जन्नत की तरफ़ गिरोह दर गिरोह ले जाया जाएगा, यहां तक कि जब वोह उस (जन्नत) के पास पहुंचेंगे और उसके दरवाजे (पहले ही) खोले जा चुके होंगे तो उनसे वहां के निगरान (खुश आमदीद करते हुए) कहेंगे : तुम पर सलाम हो, तुम खुशो खुरम रहो सो हमेशा रहेने के लिए उसमें दाख़िल हो जाओ।

وَوُضِعَ الْكِتَابُ وَجِئَءَ بِالنَّبِيِّينَ  
وَالشُّهَدَاءِ وَقُضِيَ بَيْنَهُم بِالْحَقِّ  
وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٦٩﴾

وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ  
وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُونَ ﴿٧٠﴾

وَسَيِّقَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ جَهَنَّمَ  
زُمَرًا حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ وَهَافَتِحَتْ  
أَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا أَلَمْ  
يَأْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنكُمْ يَتْلُونَ  
عَلَيْكُمْ آيَاتِ رَبِّكُمْ وَيُنذِرُونَكُمْ  
لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَذَا قَالُوا بَلَىٰ وَ  
لَكِن حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى  
الْكَافِرِينَ ﴿٧١﴾

فَيَلِدُ ادْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ  
فِيهَا فَبِئْسَ مَثْوَىٰ الْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٧٢﴾

وَسَيِّقَ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ إِلَىٰ  
الْجَنَّةِ زُمَرًا حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ وَهَافَتِحَتْ  
أَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا  
سَلَامٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ  
فَادْخُلُوا خَالِدِينَ ﴿٧٣﴾

74. और वोह (जन्नती) कहेंगे, तमाम ता'रीफें अल्लाह ही के लिए हैं जिसने हमसे अपना वा'दा सच्चा कर दिखाया और हमें सरज़मीने जन्नतका वारिस बना दिया के हम (इस) जन्नतमें जहां चाहे क़ियाम करें, सो नेक अमल करने वालों का कैसा अच्छा अज़्र है।

75. और (ऐ हबीब!) आप फरिश्तों को अर्श के इर्द गिर्द हलका बांधे हुए देखेंगे जो अपने रबकी हम्द के साथ तस्बीह करते होंगे, और (सब) लोगों के दरमियान हक्को इन्साफ के साथ फ़ैसला कर दिया जाएगा और कहा जाएगा के कुल हम्द अल्लाह ही के लाईक है जो तमाम जहानों का परवरदिगार है।

وَقَالُوا الْحُصْدُ لِلَّهِ الَّذِي صَدَقْنَا  
وَعْدَهُ وَأَوْرَثْنَا الْآرْضَ نَتَّبِعُ  
مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَاءُ قَعْمٌ  
أَجْرُ الْعَالَمِينَ ﴿٤٣﴾

وَتَرَى الْمَلَائِكَةَ حَافِيَيْنَ مِنْ  
حَوْلِ الْعَرْشِ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ  
رَبِّهِمْ وَقُضِيَ بَيْنَهُم بِالْحَقِّ وَ  
تَبِيلُ الْحُصْدِ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٥﴾

आयातुहा 85

40 सूरतुल मुअ्मिन मक्किय्यतुन 60

रुकूआतुहा 9

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाहके नाम से शुरुअ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

1. हा मीम (हकीकी मा'ना अल्लाह और रसूल ﷺ ही बेहतर जानते हैं)।
2. इस किताब का उतारा जाना अल्लाह की तरफ़से है जो ग़ालिब है, ख़ूब जाननेवाला है।
3. गुनाह बख़्शानेवाला (है) और तौबा कुबूल फ़रमाने वाला (है), सख्त अज़ाब देने वाला (है), बड़ा साहिबे करम है। उसके सिवा कोई मा'बूद नहीं, उसी की तरफ़ (सबको) लौटना है।
4. अल्लाहकी आयतों में कोई झगडा नहीं करता सिवाए उन लोगों के जिन्होंने कुफ़्र किया, सो उनका शहरों में

حَمِّ ١

تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ  
الْعَلِيمِ ﴿٢﴾

غَافِرِ الذَّنْبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ  
شَدِيدِ الْعِقَابِ ذِي الطَّوْلِ ﴿٣﴾  
إِلَهُ إِلَّا هُوَ إِلَيْهِ الْمَصِيرُ ﴿٤﴾

مَا يُجَادِلُ فِي آيَاتِ اللَّهِ إِلَّا  
الَّذِينَ كَفَرُوا فَلَا يَعْرُكُ



(आज़ादी से) घूमना फिरना तुम्हें मुग़ालते में न डाल दे।

5. उनसे पहले कौमे नूहने और उनके बाद (और) बहुतसी उम्मतोंने (अपने रसूलों को) झुटलाया और हर उम्मत ने अपने रसूलके बारेमें इरादा किया के उसे पकड़ (कर कत्ल कर दें या कैद कर) लें और बे बुनियाद बातों के ज़रीए झगड़ा किया ताकि उस (झगड़े) के ज़रीए हक़ (का असर) जाइल कर दें सो में ने उन्हें (अज़ाबमें) पकड़ लिया, पस (मेरा) अज़ाब कैसा था।

6. और उसी तरह आपके रबका फ़रमान उन लोगों पर पूरा हो कर रहा जिन्होंने कुफ़्र किया था बेशक वोह लोग दोज़ख़वाले हैं।

7. जो (फ़रिश्ते) अर्शको उठाए हुए हैं और जो उसके इर्द गिर्द हैं वोह (सब) अपने रबकी हम्द के साथ तस्बीह करते हैं और उस पर ईमान रखते हैं और अहले ईमान के लिए दुआए मग़फ़िरत करते हैं (येह अज़्र करते हैं कि) ऐ हमारे रब ! तू (अपनी) रहमत और इल्म से हर शै का इहाता फ़रमाए हुए है, पस उन लोगों को बख़्श दे जिन्होंने तौबा की और तेरे रास्ते की पैरवी की और उन्हें दोज़ख़के अज़ाब से बचा ले।

8. ऐ हमारे रब ! और उन्हें (हमेशा रेहने के लिए) ज़नाते अदन में दाख़िल फ़रमा, जिन का तूने उनसे वा'दा फ़रमा रखा है और उनके आबाओ अजदाद से और उनकी बीवियों से और उनकी औलादो ज़र्रियत से जो नेक हों (उन्हें भी उनके साथ दाख़िल फ़रमा), बेशक तू ही ग़ालिब, बड़ी हिक्मत वाला है।

تَقَلَّبُهُمْ فِي الْبِلَادِ ۝  
كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَ  
الْأَحْزَابُ مِنْ بَعْدِهِمْ وَهَمَّتْ  
كُلُّ أُمَّةٍ بِرَسُولِهِمْ لِيَأْخُذُوهُ  
وَجَدَلُوا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا بِهِ  
الْحَقَّ فَأَخَذْتُهُمْ فَكَيْفَ كَانَ

عِقَابٍ ۝

وَكَذَلِكَ حَقَّتْ كَلِمَاتُ رَبِّكَ عَلَى  
الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّهُمْ أَصْحَابُ النَّارِ ۝

الَّذِينَ يَحْمِلُونَ الْعَرْشَ وَمَنْ  
حَوْلَهُ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَ  
يُؤْمِنُونَ بِهِ وَيَسْتَغْفِرُونَ لِلَّذِينَ  
آمَنُوا رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ  
رَّحْمَةً وَعِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِينَ تَابُوا  
وَاتَّبَعُوا سَبِيلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ

الْجَحِيمِ ۝

رَبَّنَا وَأَدْخِلْهُمْ جَنَّاتِ عَدْنٍ الَّتِي  
وَعَدْتَهُمْ وَمَنْ صَدَحَ مِنْ آبَائِهِمْ  
وَآرْوَاهِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ إِنَّكَ  
أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

9. और उनको बुराइयों (की सज़ा) से बचा ले और जिसे तू ने उस दिन बुराइयों (की सज़ा) से बचा लिया, सो बेशक तूने उस पर रहम फ़रमाया, और येही तो अज़ीम कामयाबी है।

10. बेशक जिन्होंने कुफ़्र किया उन्हें पुकार कर कहा जाएगा : (आज) तुम से अल्लाह की बेजारी, तुम्हारी जानों से तुम्हारी अपनी बेजारी से ज़ियादह बढ़ी हुई है, जबकि तुम ईमान की तरफ़ बुलाए जाते थे मगर तुम इन्कार करते थे।

11. वोह कहेंगे : ऐ हमारे रब ! तू ने हमें दोबार मौत दी और तूने हमें दोबार (ही) ज़िन्दगी बख़्शी, सो (अब) हम अपने गुनाहोंका एतिराफ़ करते हैं, पस क्या (अज़ाब से बच) निकलने की तरफ़ कोई रास्ता है ?

12. (उन से कहा जाएगा : नहीं) येह (दाइमी अज़ाब) इस वजह से है कि जब अल्लाह को तन्हा पुकारा जाता था तो तुम इन्कार करते थे और अगर उसके साथ (किसी को) शरीक ठेहराया जाता तो तुम मान जाते थे, पस (अब) अल्लाह ही का हुक्म है जो (सब से) बुलंदो वाला है

13. वोही है जो तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता है और तुम्हारे लिए आस्मानसे रिज़क़ उतारता है, और नसीहत सिर्फ़ वोही कुबूल करता है जो रुजूअ (इ-लल्लाह) में रेहता है।

14. पस तुम अल्लाह की इबादत उसके लिए ताअतो बंदगीको ख़ालिस रखते हुए किया करो, अगरचे काफ़िरों को ना ग़वार ही हो।

15. दरज़ात बुलन्द करनेवाला, मालिके अर्श, अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है रूह (या'नी वही) अपने

وَقِهِمُ السَّيِّئَاتِ ۖ وَمَنْ تَقِ السَّيِّئَاتِ يَمِيلْ بِهَا إِلَىٰ مُدُنٍ مَّا بَدَأَ تُولَدُهَا ۖ وَسَبْحًا كَلِمَاتٍ خَالِفَاتٍ يَسْفَحْنَ أَسْفَاحًا ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَوْرُ الْعَظِيمُ ۙ

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يُنَادُونَ لَمَقْتُ اللَّهِ أَكْبَرُ مِنْ مَقْتِكُمْ أَنْفُسَكُمْ إِذْ تُدْعَوْنَ إِلَىٰ الْإِيمَانِ فَتَكْفُرُونَ ۙ  
قَالُوا رَبَّنَا آمَنَّا أَشْتَتَيْنِ وَ  
أَحْيَيْتَنَا أَشْتَتَيْنِ فَأَعْتَرَفْنَا بِذُنُوبِنَا  
فَهَلْ إِلَىٰ خُرُوجٍ مِّنْ سَبِيلٍ ۙ

ذَلِكُمْ بِأَنَّكَ إِذَا دُعِيَ اللَّهُ وَحْدَهُ  
كَفَرْتُمْ ۚ وَإِنْ يُشْرَكَ بِهِ تُؤْمِنُونَ ۗ  
فَالْحُكْمُ لِلَّهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيرِ ۙ

هُوَ الَّذِي يُرِيكُمُ آيَاتِهِ وَيُنَزِّل لَكُم  
مِّنَ السَّمَاءِ رِزْقًا ۖ وَمَا يَتَذَكَّرُ  
إِلَّا مَن يَنْبِئُ ۙ

فَادْعُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ  
وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ۙ

رَافِعِ الدَّرَجَاتِ ذُو الْعَرْشِ يُلْقِي  
الرُّوحَ مِنْ أَمْرِهِ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ

हुक़म से इल्का फ़रमाता है ताकि वोह (लोगोंको) इक़त्त होनेवाले दिनसे डराए।

16. जिस दिन वोह सब (कब्रोंसे) निकल पड़ेंगे और उन (के आ'माल) से कुछ भी अल्लाह पर पोशीदा न रहेगा, (इर्शाद होगा) आज किसकी बादशाही है? (फिर इर्शाद होगा) अल्लाह ही की जो यक्ता है सब ग़ालिब है।

17. आज के दिन हर जानको उसकी कमाई का बदला दिया जाएगा, आज कोई ना इन्साफी न होगी, बेशक अल्लाह बहुत जल्द हिसाब लेनेवाला है।

18. और आप उनको क़रीब आने वाली आफ़त के दिन से डराएं जब जब्ते गम से कलेजे मुंह को आएंगे। ज़ालिमों के लिए न कोई महरबान दोस्त होगा और न कोई सिफ़ारशी जिस की बात मानी जाए।

19. वोह ख़यानत करने वाली निगाहों को जानता और (उन बातों को भी) जो सीने (अपने अंदर) छुपाए रखते हैं।

20. और अल्लाह हक़ के साथ फ़ैसला फ़रमाता है, और जिन (बुतों) को येह लोग अल्लाह के सिवा पूजते हैं वोह कुछ भी फ़ैसला नहीं कर सकते, बेशक अल्लाह ही सुननेवाला, देखनेवाला है।

21. और क्या येह लोग ज़मीन में चले फिरे नहीं कि देख लेते उन लोगों का अंजाम कैसा हुआ जो उनसे पहले थे, वोह लोग कुव्वत में (भी) इनसे बहुत ज़ियादह थे और उन आसारो निशानात में (भी) जो ज़मीन में (छोड़ गए) थे। फिर अल्लाहने उनके गुनाहों की वजह से उन्हें पकड़ लिया,

مِنْ عِبَادَةٍ لِيُنذِرَ يَوْمَ التَّلَاقِ ۝۱۵

يَوْمَ هُمْ بَرْزُورَةٌ لَا يَخْفَىٰ عَلَى اللَّهِ مِنْهُمْ شَيْءٌ ۗ لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ۗ لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ۝۱۶

الْيَوْمَ تُجْزَىٰ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ ۗ لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ ۗ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝۱۷

وَأَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْأَزْفَةِ إِذِ الْقُلُوبُ لَدَى الْحَنَاجِرِ كَظِيمِينَ ۗ مَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ حَیْمٍ وَلَا شَفِيعٍ يُطَاعُ ۝۱۸

يَعْلَمُ خَائِنَةَ الْأَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي الصُّدُورُ ۝۱۹

وَاللَّهُ يَقْضِي بِالْحَقِّ ۗ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ لَا يَقْضُونَ بِشَيْءٍ ۗ إِنَّ اللَّهَ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ۝۲۰

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ كَانُوا مِنْ قَبْلِهِمْ ۗ كَانُوا هُمْ أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَآثَارًا فِي الْأَرْضِ فَأَخَذَهُمْ

और उनके लिए अल्लाह (के अज़ाब) से बचाने वाला कोई न था।

22. यह इस वजह से हुआ कि उनके रसूल खुली निशानियां ले कर आए थे फिर उन्होंने कुफ़्र किया तो अल्लाह ने उन्हें (अज़ाबमें) पकड़ लिया, बेशक वोह बडी कुव्वतवाला, सख्त अज़ाब देनेवाला है।

23. और बेशक हमने मूसा (ﷺ) को अपनी निशानियों और वाज़ेह दलीलके साथ भेजा।

24. फ़िरऔन और हामान और कारून की तरफ, तो वोह केहने लगे कि येह जादूगर है, बड़ा झूटा है।

25. फिर जब वोह हमारी बारगाह से पैगामे हक़ ले कर उनके पास आए तो उन्होंने कहा : उन लोगों के लड़कों को क़त्ल कर दो जो उनके साथ ईमान लाए हैं और उनकी औरतों को ज़िन्दा छोड़ दो, और काफ़िरों की पुर फ़रेब चालें सिर्फ़ हलाकत ही थीं।

26. और फ़िरऔन बोला : मुझे छोड़ दो मैं मूसा को क़त्ल कर दूँ और उसे चाहिए कि अपने रबको बुला ले। मुझे ख़ौफ़ है कि वोह तुम्हारा दीन बदल देगा या मुल्क (मिसर)में फ़साद फैला देगा।

27. और मूसा (ﷺ) ने कहा : मैं अपने रब और तुम्हारे रबकी पनाह ले चुका हूँ, हर मुतकब्बिर शख़्स से जो यौमे हिसाब पर ईमान नहीं रखता।

28. और मिलते फ़िरऔनमें से एक मर्दे मोमिन ने कहा

اللَّهُ يَذُوبُهُمْ<sup>ط</sup> وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ

اللَّهِ مِنْ وَّاقٍ ٢١

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانَتْ تَأْتِيهِمْ رُسُلُهُمْ  
بِالْبَيِّنَاتِ فَكَفَرُوا فَآخَذَهُمُ اللَّهُ<sup>ط</sup>

إِنَّهُ قَوِيٌّ شَدِيدُ الْعِقَابِ ٢٢

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا

وَسُلْطٰنٍ مُّبِينٍ ٢٣

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَقَارُونَ

فَقَالُوا سِحْرٌ كَذَّابٌ ٢٤

فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِالْحَقِّ مِنْ عِنْدِنَا

قَالُوا اقْتُلُوا أَبْنَاءَ الَّذِينَ آمَنُوا

مَعَهُ وَاسْتَحْيُوا نِسَاءَهُمْ<sup>ط</sup> وَمَا

كَيْدُ الْكٰفِرِينَ إِلَّا فِي ضَلٰلٍ ٢٥

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ذُرِّيَّتِي أُقْتُلُ

مُوسَىٰ وَلْيَدْعُ رَبَّهُ<sup>ج</sup> إِنِّي أَخَافُ

أَنْ يُبَدِّلَ دِينَكُمْ أَوْ أَنْ يُظْهِرَ

فِي الْأَرْضِ الْفَسَادَ ٢٦

وَقَالَ مُوسَىٰ إِنِّي عُذْتُ بِرَبِّي وَ

رَبِّكُمْ مِنْ كُلِّ مُتَكَبِّرٍ لَا يُؤْمِنُ

بِیَوْمِ الْحِسَابِ ٢٧

وَقَالَ رَجُلٌ مُّؤْمِنٌ<sup>ع</sup> مِنْ آلِ



जो अपना ईमान छुपाए हुए था : क्या तुम एक शख्स को कत्ल करते हो (सिर्फ) इस लिए कि वोह केहता है मेरा रब अल्लाह है और वोह तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से वाजेह निशानियां ले कर आया है, और अगर (बिल फर्ज) वोह झूटा है तो उसके झूट का बोझ उसी पर होगा और अगर वोह सच्चा है तो जिस क़दर अज़ाब का वोह तुमसे वा'दा कर रहा है तुम्हें पहुँच कर रहेगा, बेशक अल्लाह उसे हिदायत नहीं देता जो हद से गुज़रनेवाला सरासर झूटा हो।

29. ऐ मेरी क़ौम! आज के दिन तुम्हारी हुकूमत है (तुम ही) सर ज़मीने (मिस्त्र) में इक्तदार पर हो फिर कौन हमें अल्लाह के अज़ाब से बचा सकता है, अगर वोह (अज़ाब) हमारे पास आ जाए। फिर औनने कहा : मैं तुम्हें फ़क़त वोही बात समझता हूँ जिसे मैं खुद (सहीह) समझता हूँ और मैं तुम्हें भलाई की राह के सिवा (और कोई रास्ता) नहीं दिखाता।

30. और उस शख्स ने कहा जो ईमान ला चुका था : ऐ मेरी क़ौम! मैं तुम पर (भी अगली) क़ौमों के रोज़े बद की तरह (अज़ाब) का खौफ़ रखता हूँ।

31. क़ौमे नूह और आद और समूद और जो लोग उनके बाद हुए (उन) के दस्तूरे सज़ा की तरह, और अल्लाह बंदों पर हरगिज़ ज़ियादती नहीं चाहता।

32. और ऐ क़ौम! मैं तुम पर चीखो पुकार के दिन (या'नी क़ियामत) से खौफ़ ज़दा हूँ।

33. जिस दिन तुम पीठ फेर कर भागोगे और तुम्हें अल्लाह

فِرْعَوْنَ يَكْتُمُ إِيمَانَهُ أَتَقْتُلُونَ  
رَجُلًا أَنْ يَقُولَ رَبِّيَ اللَّهُ وَقَدْ  
جَاءَكُمْ بِالْبَيِّنَاتِ مِنْ رَبِّكُمْ<sup>ط</sup> وَ  
إِنْ يَكُ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهُ<sup>ج</sup> وَإِنْ  
يَكُ صَادِقًا يُصِيبُكُمْ بَعْضُ الَّذِي  
يَعِدُّكُمْ<sup>ط</sup> إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ  
هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ ٢٨

يَقَوْمِ لَكُمْ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ظَهَرِينَ  
فِي الْأَرْضِ<sup>ر</sup> فَمَنْ يَضُرُّنَا مِنْ  
بَاسِ اللَّهِ إِنْ جَاءَنَا<sup>ط</sup> قَالَ  
فِرْعَوْنُ مَا أُرِيكُمْ إِلَّا مَا أَرَىٰ وَ  
مَا أَهْدِيكُمْ إِلَّا سَبِيلَ الرَّشَادِ ٢٩  
وَقَالَ الَّذِي آمَنَ يَأْتِيكُمُ الْيَوْمَ  
عَلَيْكُمْ<sup>ط</sup> مِثْلَ يَوْمِ آلِ حَارَانَ<sup>ل</sup>

مِثْلَ دَابِ قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ  
وَالَّذِينَ مِنْ بَعْدِهِمْ<sup>ط</sup> وَمَا اللَّهُ  
يُرِيدُ ظَلْمًا لِّلْعِبَادِ ٣١

وَيَأْتِيكُمُ الْيَوْمَ<sup>ل</sup> الْيَوْمَ  
الْتَّنَادِ ٣٢

يَوْمَ تَوَلَّوْنَ مُدْبِرِينَ<sup>ج</sup> مَا لَكُمْ

(के अज़ाब) से बचाने वाला कोई नहीं होगा और जिसे अल्लाह गुमराह ठेहरा दे तो उस के लिए कोई हादी-व-रहनुमा नहीं होता।

34. और (ऐ अहले मिस्र ! ) बेशक तुम्हारे पास इससे पहले यूसुफ़ (عليه السلام) वाजेह निशानियों के साथ आ चुके और तुम हमेशा उन (निशानियों) के बारे में शक में (पड़े) रहे जो वोह तुम्हारे पास लाए थे, यहां तक कि जब वोह वफ़ात पा गए तो तुम केहने लगे कि अब अल्लाह उनकेबाद हरगिज़ किसी रसूल को नहीं भेजेगा। उसी तरह अल्लाह उस शख्स को गुमराह ठेहरा देता है जो हद से गुज़रने वाला शक करने वाला हो।

35. जो लोग अल्लाह की आयतों में झगड़ा करते हैं बिगैर किसी दलील के जो उनके पास आई हो, (येह झगड़ा करना) अल्लाह के नजदीक और ईमानवालों के नजदीक सख्त बेज़ारी (की बात) है, इसी तरह अल्लाह हर एक मग़रूर (और) सरकश के दिल पर मोहर लगा देता है।

36. और फ़िरऔनने कहा : ऐ हामान ! तू मेरे लिए एक ऊंचा महल बना दे ताकि मैं (उस पर चढ़ कर) रास्तों पर जा पहुँचूं।

37. (या'नी) आस्मानों के रास्तों पर, फिर मैं मूसा के खुदा को झांक कर देख सकूँ और मैं तो उसे झूटा ही समझता हूँ, और इस तरह फ़िरऔनके लिए उसकी बद अमली खुशनुमा कर दी गई और वोह (अल्लाह की) राह से रोक दिया गया, और फ़िरऔनकी पुर फ़रेब तदबीर महज़ हलाकत ही में थी।

مِّنَ اللَّهِ مِنْ عَاصِمٍ ۚ وَمَنْ يُضِلِلْ  
اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ۝۳۳

وَلَقَدْ جَاءَكُمْ يُوسُفُ مِنْ قَبْلُ  
بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا زِلْتُمْ فِي شَكٍّ مِّمَّا  
جَاءَكُمْ بِهِ ۖ حَتَّىٰ إِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ  
لَنْ نَبْعَثَ اللَّهَ مِنْ بَعْدِهِ رَاسُولًا ۖ  
كَذَلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ  
مُّرْتَابٌ ۝۳۴

الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ  
بِغَيْرِ سُلْطَانٍ أَتَاهُمْ ۖ كَبِيرَ مَقْتًا  
عِنْدَ اللَّهِ وَعِنْدَ الَّذِينَ آمَنُوا ۖ  
كَذَلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ قَلْبٍ  
مُتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ ۝۳۵

وَقَالَ فِرْعَوْنُ لِيَهَامُنُ ابْنُ لِي  
صَاحًا لَعَلِّي أَبْلُغُ الْأَسْبَابَ ۝۳۶

أَسْبَابَ السَّمَوَاتِ فَاتِّبِعْ إِلَىٰ  
إِلٰهِ مُوسَىٰ وَ إِنِّي لَأُظَنُّهُ كَاذِبًا ۖ  
وَ كَذَلِكَ زُيِّنَ لِفِرْعَوْنَ سُوءُ  
عَمَلِهِ وَ صَدَّ عَنِ السَّبِيلِ ۖ وَ مَا  
كَيْدُ فِرْعَوْنَ إِلَّا فِي تَبَابٍ ۝۳۷

38. और उस शख्स ने कहा जो ईमान ला चुका था : ऐ मेरी कौम! तुम मेरी पैरवी करो में तुम्हें खैरो हिदायत की राह पर लगा दूंगा।

39. ऐ मेरी कौम ! यह दनिया की जिन्दगी बस (चंद रोजा) फ़ाइदा उठाने के सिवा कुछ नहीं और बेशक आखिरत ही हमेशा रहेने का घर है।

40. जिसने बुराई की तो उसे बदला नहीं दिया जाएगा मगर सिर्फ उसी कदर, और जिसने नेकी की, ख़्वाह मर्द हो या औरत और मोमिन भी हो तो वोही लोग जन्नत में दाख़िल होंगे उन्हें वहां बे हिसाब रिज्क दिया जाएगा।

41. और ऐ मेरी कौम! मुझे क्या हुआ है कि में तुम्हें नजात की तरफ बुलाता हूं और तुम मुझे दोज़ख़की तरफ बुलाते हो।

42. तुम मुझे (येह) दा'वत देते हो कि में अल्लाह के साथ कुफ़्र करूं और उसके साथ उस चीज़को शरीक ठेहराऊं जिसका मुझे कुछ इल्म भी नहीं और मैं तुम्हें खुदाए गालिब की तरफ बुलाता हूं जो बड़ा बख़्शनेवाला है।

43. सच तो येह है कि तुम मुझे जिस चीज़ की तरफ बुला रहे हो वोह न तो दुनिया में पुकारे जाने के काबिल है और न (ही) आखिरत में और बेशक हमारा वापस लौटना अल्लाह ही की तरफ है और यकीनन हद से गुजरनेवाले ही दोज़ख़ी हैं।

44. सो तुम अनक़रीब (वोह बातें) याद करोगे जो मैं तुम

وَقَالَ الَّذِي آمَنَ يَتَّبِعُونَ  
أَهْدِكُمْ سَبِيلَ الرَّشَادِ ٣٨

يَتَّبِعُونَ إِنَّمَا هَذِهِ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا  
مَتَاعٌ وَإِنَّ الْآخِرَةَ هِيَ دَارُ  
الْقَرَارِ ٣٩

مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزَى إِلَّا  
مِثْلَهَا وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ  
ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولَٰئِكَ  
يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُونَ فِيهَا  
بِغَيْرِ حِسَابٍ ٤٠

وَيَقَوْمٌ مَّا لِي أَدْعُوكُمْ إِلَى النَّجْوَىٰ  
وَتَدْعُونَنِي إِلَى النَّارِ ٤١

تَدْعُونَنِي لِأَكْفُرَ بِاللَّهِ وَأُشْرِكَ  
بِهِ مَا لَيْسَ لِي بِهِ عِلْمٌ وَأَنَا  
أَدْعُوكُمْ إِلَى الْعَزِيزِ الْعَقَّارِ ٤٢

لَا جَرَمَ أَنَّمَا تَدْعُونَنِي إِلَيْهِ  
لَيْسَ لَهُ دَعْوَةٌ فِي الدُّنْيَا وَلَا فِي  
الْآخِرَةِ وَأَنْ مَّرَدَّنَا إِلَى اللَّهِ وَأَنَّ  
السُّرْفِينَ هُمْ أَصْحَابُ النَّارِ ٤٣

فَسَتَذْكُرُونَ مَا أَقُولُ لَكُمْ ٤٤

से केह रहा हूं, और मैं अपना मुआमला अल्लाह के सुपुर्द करता हूं, बेशक अल्लाह बन्दों को देखनेवाला है।

45. फिर अल्लाहने उसे उन लोगों की बुराइयों से बचा लिया जिनकी वोह तदबीर कर रहे थे और आले फ़िरऔनको बुरे अज़ाबने घेर लिया।

46. आतिशे दोज़ख़के सामने येह लोग सुब्हो शाम पेश किए जाते हैं और जिस दिन क़ियामत बपा होगी (तो हुक्म होगा), आले फ़िरऔनको सख़्त तरीन अज़ाबमें दाख़िल कर दो।

47. और जब वोह लोग दोज़ख़में बाहम झगड़ेंगे तो कमज़ोर लोग उनसे कहेंगे जो (दुनिया में) बड़ाई ज़ाहिर करते थे कि हम तो तुम्हारे पीरोकार थे सो क्या तुम आतिशे दोज़ख़का कुछ हिस्सा (ही) हम से दूर कर सकते हो।

48. तकब्बुर करनेवाले कहेंगे : हम सब ही उसी (दोज़ख़) में पड़े हैं बेशक अल्लाहने बंदों के दरमियान हत्मी फैसला फ़रमा दिया है।

49. और आगमें पड़े हुए लोग दोज़ख़के दारोगों से कहेंगे : अपने रब से दुआ करो के वोह किसी दिन तो हम से अज़ाब हलका कर दे।

50. वोह कहेंगे : क्या तुम्हारे पास तुम्हारे पयग़म्बर वाज़ेह निशानियां ले कर नहीं आए थे, वोह कहेंगे : क्यों नहीं, (फ़िर दारोगे) कहेंगे : तुम खुद ही दुआ करो और काफ़िरों की दुआ (हमेंशा) राएगां ही होगी।

وَأَفْوِضْ أَمْرِي إِلَى اللَّهِ ۖ إِنَّ  
اللَّهَ بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ ﴿٣٣﴾

فَوَقَّهَ اللَّهُ سَيِّئَاتِ مَا مَكَرُوا وَ  
حَاقَ بِالْإِلِ فِي رَعُونَ سُوءَ الْعَذَابِ ﴿٣٤﴾

النَّارُ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَ  
عَشِيًّا ۖ وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ

أَدْخِلُوا آلَ فِرْعَوْنَ أَشَدَّ الْعَذَابِ ﴿٣٥﴾

وَإِذْ يَتَحَاجُّونَ فِي النَّارِ فَيَقُولُ

الضُّعْفَاءُ لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا

كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ أَنْتُمْ مُعْتَبَرُونَ

عَنَّا نَصِيبًا مِّنَ النَّارِ ﴿٣٦﴾

قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُلٌّ

فِيهَا ۗ إِنَّ اللَّهَ قَدْ حَكَمَ بَيْنَ

الْعِبَادِ ﴿٣٧﴾

وَقَالَ الَّذِينَ فِي النَّارِ لِخَزَنَةِ

جَهَنَّمَ ادْعُوا رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ عَنَّا

يَوْمًا مِّنَ الْعَذَابِ ﴿٣٨﴾

قَالُوا أَوَلَمْ تَكُ تَأْتِيكُمُ رُسُلِكُمُ

بِالْبَيِّنَاتِ ۖ قَالُوا بَلَىٰ ۖ قَالُوا فَادْعُوا

وَمَا دَعَا الْكٰفِرِينَ إِلَّا فِي ضَلٰلٍ ۚ ﴿٣٩﴾



51. बेशक हम अपने रसूलों की और ईमान लानेवालों की दुन्यवी ज़िन्दगी में (भी) मदद करते हैं और उस दिन (भी करेंगे) जब गवाह खड़े होंगे।

إِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِينَ آمَنُوا  
فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُومُ  
الْأَشْهَادُ ﴿٥١﴾

52. जिस दिन ज़ालिमों को उनकी मा'जेरत फ़ाइदा नहीं देगी और उनके लिए फिटकार होगी और उन के लिए (जहन्नम का) बुरा घर होगा।

يَوْمَ لَا يَنْفَعُ الظَّالِمِينَ مَعَذِرَتُهُمْ  
وَلَهُمُ الْعَذَابُ وَلَهُمْ سُوءُ الدَّارِ ﴿٥٢﴾

53. और बेशक हमने मूसा (عليه السلام) को (किताबे) हिदायत अता की और हमने (उनके बाद) बनी इसराईल को (उस) किताब का वारिस बनाया।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْهُدَى وَ  
أَوْشَيْنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ الْكِتَابَ ﴿٥٣﴾

54. जो हिदायत है और अक्लवालों के लिए नसीहत है।

هُدًى وَذِكْرَى لِأُولِي الْأَلْبَابِ ﴿٥٣﴾

55. पस आप सब्र कीजिए, बेशक अल्लाह का वा'दा हक़ है और अपनी उम्मत के गुनाहों की बख्शिश तलब कीजिए ★ और सुन्ने शाम अपने रबकी हम्दके साथ तस्बीह किया कीजिए।

فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَاسْتَغْفِرْ  
لِدُنْيِكَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ  
بِالْعَشِيِّ وَالْإِبْكَارِ ﴿٥٥﴾

★ (“लि-ज़्बि-क” में “उम्मत” मुज़ाफ़ है जो कि महजूफ़ है लिहाज़ा इस बिना पर यहां वस्तगफ़िर लि-ज़्बि-क से मुराद उम्मत के गुनाह हैं। इमाम नस्फ़ी, इमाम कुर्तबी और अल्लामा शौकानी ने येही मा'ना बयान किया है। ह्वालाजात मुलाहिज़ा करें।

1. (वस्तगफ़िर लि-ज़्बि-क) अय्यु लि-ज़्बि उम्मति-क “या'नी अपनी उम्मतके गुनाह”। (नस्फ़ी, मदारिकुत तन्ज़ील व हकाइकुत ता'वील, 4 : 359)

2. (वस्तगफ़िर लि-ज़्बि-क) क़ी-ल : लि-ज़्बि उम्मति-क हज़फ़ुल मुज़ाफ़ व अकीमुल मुज़ाफ़ इलैहि मकामुह “वस्तगफ़िर लि-ज़्बि-क” के बारेमें कहा गया है कि इससे मुराद उम्मत के गुनाह हैं। यहां मुज़ाफ़ को हज़फ़ कर के मुज़ाफ़ इलैहको उसका काइम मुक़ाम कर दिया गया।”

(कुर्तबी, अल जामिउल अहकामुल कुरआन, 15 : 324)

3. “वक़ी-ल लि-ज़्बि उम्मति-क फ़ी हक़ि-क” येह भी कहा गया है कि लि-ज़्बि-क या'नी आप अपने हक़में उम्मत से सरज़द होनेवाली ख़ताओं की।” (इब्ने हय्यान उन्दुलुसी, अल बहरुल मुहीत, 7 : 471)

4. (वस्तगफ़िर लि-ज़्बि-क) कीलल मुरादु ज़्बि उम्मति-क फहु-व अला हज़फ़ुल मुज़ाफ़ “कहा गया है कि इससे मुराद उम्मतके गुनाह हैं और येह मा'ना मुज़ाफ़ के महजूफ़ होने की बिना पर है।” (अल्लामा शौकानी, फ़तुल कदीर, 4 : 497)

56. बेशक जो लोग अल्लाह की आयतों में झगड़ा करते हैं बिगैर किसी दलील के जो उनके पास आई हो, उनके सीनों में सिवाए गुरुर के और कुछ नहीं है वोह उस (हकीकी बरतरी) तक पहुंचनेवाले ही नहीं। पस आप (उनके शर् से) अल्लाह की पनाह मांगते रहिए, बेशक वोही खूब सुननेवाला खूब देखनेवाला है।

إِنَّ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ بِغَيْرِ سُلْطَنٍ أَتَاهُمْ إِنْ فِي صُدُورِهِمْ إِلَّا كِبْرٌ مَّا هُمْ بِبَالِغِيهِ ۚ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ ۗ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ﴿٥٦﴾

57. यकीनन आस्मानों और ज़मीन की पैदाइश इन्सानोकी पैदाइश से कहीं बढ़ कर है लेकिन अक्सर लोग इल्म नहीं रखते।

لَخَلْقِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ أَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٥٧﴾

58. और अँधा और बीना बराबर हो सकते सो (उसी तरह) जो लोग ईमान लाए और नेक आ'माल किए (वोह) और बदकार भी (बराबर) नहीं हैं। तुम बहुत ही कम नसीहत कुबूल करते हो।

وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ ۗ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَلَا السُّيَءِ ۗ قَلِيلًا مَّا تَذَكَّرُونَ ﴿٥٨﴾

59- बेशक क्रियामत ज़रूर आनेवाली है, इसमें कोई शक नहीं। लेकिन अक्सर लोग यकीन नहीं रखते।

إِنَّ السَّاعَةَ لَأْتِيَةٌ ۖ لَا رَيْبَ فِيهَا ۚ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٥٩﴾

60. और तुम्हारे रबने फ़रमाया है तुम लोग मुझ से दुआ किया करो में ज़रूर कुबूल करूंगा, बेशक जो लोग मेरी बंदगी से सरकशी करते हैं वोह अनकरीब दोज़ख़में ज़लील हो कर दाखिल होंगे।

وَقَالَ رَبُّكُمْ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ ۗ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دُخْرِينَ ﴿٦٠﴾

61. अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए रात बनाई ताकि तुम इसमें आराम पाओ और दिन को देखने के लिए रौशन बनाया। बेशक अल्लाह लोगों पर फ़ज़ल फ़रमानेवाला है लेकिन अक्सर लोग शुक्र अदा नहीं करते।

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصَرًا ۗ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٦١﴾

62. येही अल्लाह तुम्हारा रब है जो हर चीज़का ख़ालिक

ذُلكم الله ربكم خالق كل شيء ۗ

है, उसके सिवा कोई मा'बूद नहीं फिर तुम कहां भटकते फिरते हो।

63. इसी तरह वोह लोग बेहके फिरते थे जो अल्लाह की आयतों का इन्कार किया करते थे।

64. अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को करारगाह बनाया और आस्मान को छत बनाया और तुम्हें शकलो सूरत बख़्शी फिर तुम्हारी सूरतों को अच्छा किया और तुम्हें पाकीज़ा चीजों से रोज़ी बख़्शी, येही अल्लाह तुम्हारा रब है। पस अल्लाह बड़ी बरकत वाला है जो सब जहानों का रब है।

65. वोही जिन्दा है, उसके सिवा कोई मा'बूद नहीं, पस तुम उसकी इबादत उसके लिए ताअतो बंदगी को खालिस रखते हुऐ किया करो, तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं जो सब जहानों का परवरदिगार है।

66. फ़रमा दीजिए : मुझे मना' किया गया है के में उनकी परस्तिश करूं जिन बुतोंकी तुम अल्लाह को छेड कर परस्तिश करते हो जबकि मेरे पास मेरे रबकी जानिब से वाज़ेह निशानियां आ चुकी हैं और मुझे हुक्म दिया गया है के तमाम जहानों के परवरदिगार की फ़रमां बरदारी करों।

67. वोही है जिसने तुम्हारी (कीमियाई ह्यात की इब्तिदाई) पैदाईश मिट्टी से की फिर (ह्यातियाती इब्तिदा) एक नुत्फ़ा (या'नी एक खुल्ये) से, फिर रहमे मादर में मोअल्लक वुजूद से, फिर (बिलाआख़िर) वोही तुम्हें बच्चा बनकर निकालता है फिर (तुम्हें नश्वोनुमा देता है) ताकि तुम अपनी जवानी को पहंच जाओ। फिर (तुम्हें उम्र की मोहलत देता है) ताकि तुम बूढ़े हो जाओ और तुम में से कोई (बुढ़ापे से) पहले ही वफ़ात पा जाता

لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ فَآَنِي تُؤْفِكُونَ ﴿٢٢﴾

كَذَلِكَ يُؤْفِكُ الَّذِينَ كَانُوا

بِآيَاتِ اللَّهِ يَجْحَدُونَ ﴿٢٣﴾

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمْ الْأَرْضَ

قَرَارًا وَالسَّمَاءَ بِنَاءً ۖ وَصَوَّرَكُمْ

فَأَحْسَنَ صُورَكُمْ ۖ وَرَزَقَكُمْ مِنَ

الطَّيِّبَاتِ ۗ ذَلِكُمْ اللَّهُ رَبُّكُمْ ۗ

فَتَبَارَكَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٢٤﴾

هُوَ الْحَيُّ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ فَادْعُوهُ

مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۗ الْحَمْدُ

لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٢٥﴾

قُلْ إِنِّي نُهِيتُ أَنْ أَعْبُدَ الَّذِينَ

تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَبَّأَجَاءِنِي

الْبَيْتُ مِنْ رَبِّي ۗ وَأُمِرْتُ أَنْ

أُسَلِّمَ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٢٦﴾

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ

مِنْ نُطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ

يُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوا

أَشَدَّكُمْ ثُمَّ لِتَكُونُوا شُيُوخًا ۖ وَ

مِنْكُمْ مَنْ يُتَوَفَّى مِنْ قَبْلُ ۖ وَ

لِتَبْلُغُوا أَجَلًا مُّسَمًّى ۖ وَ لَعَلَّكُمْ

है और (ये सब कुछ इस लिए किया जाता है) ताकि तुम (अपनी अपनी) मुकर्ररा मीआद तक पहुंच जाओ और इस लिए (भी) कि तुम समझ सको।

68. वोही है जो जिन्दगी देता है और मौत देता है फिर जब वोह किसी का फ़ैसला फ़रमाता है तो सिर्फ़ उसे फ़रमा देता है हो जा पस वोह हो जाता है।

69. क्या आपने उन लोगों को नहीं देखा जो अल्लाह की आयतों में झगडा करते हैं, वोह कहां भटके जा रहे हैं।

70. जिन लोगोंने किताबको (भी) झुटला दिया और उन (निशानियों) को (भी) जिनके साथ हमने अपने रसूलों को भेजा था, तो वोह अ़नक़रीब (अपना अंजाम) जान लेंगे।

71. जब उनकी गरदनो में तौक और जंजीरें होंगी, वोह घसीटे जा रहे होंगे।

72. खौलते हुए पानी में, फिर आग में (ईधन के तौर पर) झोंक दीए जाएंगे।

73. फिर उनसे कहा जाएगा : कहां हैं वोह (बुत) जिन्हें तुम शरीक ठेहराते थे।

74. अल्लाह के सिवा, वोह कहेंगे : वोह हम से गुम हो गए बल्कि हम तो पहले किसी भी चीज की परस्तश नहीं करते थे, उसी तरह अल्लाह काफ़िरों को गुमराह ठेहराता है।

75. येह (सज़ा) इसका बदला है कि तुम ज़मीनमें नाहक़ खूशियां मनाया करते थे और उसका बदला है कि तुम इतराया करते थे।

تَعْقُلُونَ ﴿٦٤﴾

هُوَ الَّذِي يُحْيِي وَ يُيْتِّتُ ۚ فَإِذَا  
قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ  
فَيَكُونُ ﴿٦٥﴾

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي  
آيَاتِ اللَّهِ ۖ أَتَىٰ يَصْرِفُونَ ﴿٦٦﴾

الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآلِكَتِبِ وَ بَيَّ  
أَرْسَلْنَا بِهِ رُسُلَنَا فَتَسُوفُ  
يَعْلَمُونَ ﴿٦٧﴾

إِذِ الْأَعْلَىٰ فِي أَعْنَاقِهِمْ وَ السَّلْسِلُ  
يُسْحَبُونَ ﴿٦٨﴾

فِي الْحَبِيمِ ۗ ثُمَّ فِي النَّارِ يُسْجَرُونَ ﴿٦٩﴾

ثُمَّ قِيلَ لَهُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ  
تُشْرِكُونَ ﴿٧٠﴾

مِنْ دُونِ اللَّهِ ۖ قَالُوا ضَلُّوا عَنَّا بَلْ  
لَمْ نَكُنْ نَدْعُوا مِنْ قَبْلُ شَيْئًا ۖ  
كَذَلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ الْكَافِرِينَ ﴿٧١﴾

ذُكِّمْتُمْ بِهَا كُنْتُمْ تَفْرَحُونَ فِي  
الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَ بِهَا كُنْتُمْ  
تَفْرَحُونَ ﴿٧٢﴾



76. दोज़ख़के दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ तुम इसमें हमेशा रहेनेवाले हो, सो गुरुर करनेवालों का ठिकाना कितना बुरा है।

أَدْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا  
فَبئس مثوى المتكبرين ﴿٤٦﴾

77. पस आप सब्र कीजिए बेशक अल्लाह का वा'दा सच्चा है, फिर अगर हम आपको इस (अज़ाब) का कुछ हिस्सा दिखा दें जिस का हम उनसे वा'दा कर रहे हैं या हम आपको (इससे कबूल) वफ़ात दे दें तो (दोनों सूरतों में) वोह हमारी ही तरफ़ लौटाए जाएंगे।

فَأصِدِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَمَا  
نُرِيكَ بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ  
تَتَوَفَّيْنَاكَ فَأَلَيْنَا يَوْمَئِذٍ جَعُونَ ﴿٤٧﴾

78. और बेशक हमने आपसे पहले बहुतसे रसूलों को भेजा, उनमें से बा'ज़ का हाल हमने आप पर बयान फ़रमा दिया और उनमें से बा'ज़ का हाल हमने (अभी तक) आप पर बयान नहीं फ़रमाया, और किसी भी रसूल के लिए येह (मुमकिन) न था कि वोह कोई निशानी भी अल्लाह के इज़्ज के बिगैर ले आए, फिर जब अल्लाह का हुक्म आ पहुंचा (और) हक्को इन्साफ़ के साथ फ़ैसला कर दिया गया तो उस वक़्त अहले बातिल ख़सारे में रहे।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّن قَبْلِكَ  
مِنْهُمْ مَّنْ قَصَصْنَا عَلَيْكَ وَ  
مِنْهُمْ مَّنْ لَّمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ ۗ  
مَا كَانَ لِرَسُولٍ أَنْ يَأْتِيَ بِآيَةٍ إِلَّا  
بِإِذْنِ اللَّهِ ۗ فَإِذَا جَاءَ أَمْرُ اللَّهِ  
قُضِيَ بِالْحَقِّ وَخَسِرَ هُنَالِكَ  
الْمُبْطِلُونَ ﴿٤٨﴾

79. अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए चौपाए बनाए ताकि तुम उनमें से बा'ज़ पर सवारी करो और इन में से बा'ज़ को तुम खाते हो।

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمْ الْأَنْعَامَ  
لِتَرْكَبُوا مِنْهَا وَمِنْهَا تَكُلُونَ ﴿٤٩﴾

80. और तुम्हारे लिए उनमें और भी फ़वाइद हैं और ताकि तुम उन पर सवार हो कर (मज़ीद) उस ज़रूरत (की जगह) तक पहुंच सको जो तुम्हारे सीनों में (मुतअय्यन) है और (येह कि तुम उन पर और कशितयों पर सवार किए जाते हो।

وَلَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ وَلِتَبَلَّغُوا عَلَيْهَا  
حَاجَةً فِي صُدُورِكُمْ وَعَلَيْهَا وَعَلَى  
الْفُلْكِ تُحْمَلُونَ ﴿٥٠﴾

81. और वोह तुम्हें अपनी (बहुत सी) निशानियां दिखाता है, सो तुम अल्लाह की किन किन निशानियों को इन्कार करोगे।

وَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ ۗ فَآسَىٰ إِلَيْتِ اللَّهُ  
تُكْفَرُونَ ﴿٥١﴾

82. सो क्या उन्होंने ज़मीनमें सैरो सियाहत नहीं की के वोह देखते कि उन लोगों को अंजाम कैसा हुवा जो उनसे पहले गुजर गए, वोह इन लोगों से (ता'दाद में भी) बहुत ज़ियादह थे और ताक़तमें (भी) सख़्त तर थे और निशानात के लिहाज़ से (भी) जो (वोह) ज़मीन में छोड़ गए हैं (कहीं बढ़ कर थे) मगर जो कुछ वोह कमाया करते थे उनके किसी काम न आया।

83. फिर जब उनके पयग़म्बर उनके पास वाज़ेह निशानियां ले कर आए तो उनके पास जो (दुनिया वी) इल्मो फ़न था वोह उस पर इतराते रहे और (उसी हाल में) उन्हें उस (अज़ाब) ने आ घेरा जिसका वोह मज़ाक़ उड़ाया करते थे।

84. फिर जब उन्होंने हमारा अज़ाब देख लिया तो केहने लगे : हम अल्लाह पर ईमान लाए जो यक्ता है और हमने उन (सब) का इन्कार कर दिया जिन्हें हम इसका शरीक ठेहराया करते थे।

85. फिर उनका ईमान लाना उनके कुछ काम न आया जबकि उन्होंने हमारे अज़ाब को देख लिया था, अल्लाह का (येही) दस्तूर है जो उसके बंदों में गुजरता चला आ रहा है और इस मुक़ाम पर काफ़िरोंने (हमेशा) सख़्त नुक़सान उठाया।

أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا  
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ  
قَبْلِهِمْ ۖ كَانُوا أَكْثَرَ مِنْهُمْ  
وَ أَشَدَّ قُوَّةً وَ أَثَرًا فِي الْأَرْضِ فَمَا  
أَعْنَىٰ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٨٢﴾

فَلَمَّا جَاءَهُمْ رَسُولُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ  
فَرِحُوا بِمَا عِنْدَهُمْ مِنَ الْعِلْمِ وَ حَاقَ  
بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٨٣﴾  
فَلَمَّا رَأَوْا بَأْسَنَا قَالُوا امْنًا بِاللَّهِ  
وَ حُدَاهُ ۚ وَ كَفَرْنَا بِهَا كُفًّا بِه  
مُشْرِكِينَ ﴿٨٤﴾

فَلَمْ يَكُ يَنْفَعُهُمْ إِيَّانُهُمْ لَنَا  
رَأَوْا بَأْسَنَا سُنَّتَ اللَّهِ الَّتِي  
قَدْ خَلَتْ فِي عِبَادِهِ ۚ وَ خَسِرَ  
هَذَا الْكُفْرُ وَ ن ﴿٨٥﴾

आयातुहा 54

41 सूरतु हा-मीम अस्सज्दति मक्कियतुन 61

उकूआतुहा 6

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाहके नाम से शुरू जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

1. हा मीम (हकीकी मा'ना अल्लाह और रसूल ﷺ  
ही बेहतर जानते हैं)।

2. निहायत महरबान बहुत रहम फ़रमानेवाले (रब) की  
जानिब से उतारा जाना है।

حَم ﴿١﴾

تَنْزِيلٌ مِنَ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ﴿٢﴾

3. (इस) किताब का जिसकी आयात वाज़ेह तौर पर बयान कर दी गई हैं इल्मो दानिश रखने वाली क़ौमके लिए अरबी (ज़बान में) क़ुरआन (है)।

4. खुशख़बरी सुनानेवाला है और डर सुनानेवाला है, फिर इनमें से अक्सर लोगों ने रूगर्दानी की सो वोह (उसे) सुनते ही नहीं हैं।

5. और केहते हैं कि हमारे दिल उस चीज़ से ग़िलाफ़ों में हैं जिसकी तरफ़ आप हमें बुलाते हैं और हमारे कानों में (बेहरेपनका) बोझ है और हमारे और आपके दरमियान परदा है सो आप (अपना) अमल करते रहिए हम अपना अमल करनेवाले हैं।

6. (इनके परदे हटाने और सुनने पर आमदह करने के लिए) फ़रमा दीजिए : (ऐ काफ़िरो!) बस मैं जाहिरन आदमी होने में तो तुम ही जैसा हूँ (फिर मुझसे और मेरी दा'वत से इस क़दर क्यों गुरेज़ां हो) मेरी तरफ़ येह वही भेजी गई है कि तुम्हारा मा'बूद फ़कत मा'बूदे यक्ता है, पस तुम इसी की तरफ़ सीधे मुतवज्जे रहो और उससे मग़फ़िरत चाहो, और मुशरिकों के लिए हलाकत है।

7. जो ज़कात अदा नहीं करते और वोही तो आख़िरत के भी मुन्किर हैं।

8. बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे उनके लिए ऐसा अज़्र है जो कभी ख़त्म नहीं होगा।

9. फ़रमा दीजिए : क्या तुम उस (अल्लाह) का इन्कार करते हो जिसने ज़मीन को दो दिन (या'नी दो मुहत्तों) में

كُتِبَ فُصِّلَتْ آيَاتُهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا  
لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿٣﴾

بَشِيرًا وَنَذِيرًا فَأَعْرَضَ أَكْثَرُهُمْ  
فَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ﴿٤﴾

وَقَالُوا قُلُوبُنَا فِيْ أَكْتَةٍ مِّمَّا  
تَدْعُونَا إِلَيْهِ وَفِيْ آذَانِنَا وَقْرٌ وَ  
مِنْ بَيْنِنَا وَبَيْنِكَ حِجَابٌ فَاعْمَلْ  
إِنَّا عَمِلُونَ ﴿٥﴾

قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوحَى  
إِلَىَّ أَنَّمَا إِلَهُكُمُ إِلَهُ وَاحِدٌ  
فَاسْتَقِيمُوا إِلَيْهِ وَاسْتَغْفِرُوا  
وَإِنَّ لِلْبَشَرِ لَكِينًا ﴿٦﴾

الَّذِينَ لَا يُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ  
بِالْآخِرَةِ هُمْ كَفَرُونَ ﴿٧﴾

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ  
لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ﴿٨﴾

قُلْ أَيُّكُمْ لَنْ نُنْفِزَهُ بِالَّذِي خَلَقَ  
الْأَرْضَ فِي يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُونَ لَهُ

पैदा फ़रमाया और तुम उसके लिए हमसर ठेहराते हो, वही सारे ज़हानों का परवरदिगार है।

10. और उसके अंदर (से) भारी पहाड़ (निकाल कर) उसके ऊपर रख दिए और उसके अंदर (मा'दनियात, आबी ज़खाइर, कुदरती वसाइल और दीगर कुव्वतों की) बरकत रखी, और उसमें (जुमला मख़लूक के लिए) गिज़ाएं (और सामाने मईशत) मुकर्रर फ़रमाए (येह सब कुछ उसने) चार दिनों (या'नी चार इर्तिक़ाई ज़मानों) में मुकम्मल किया, (येह सारा रिज़क अस्लन) तमाम तलबगारों (और हाज़तमंदों) के लिए बराबर है।

11. फिर वोह समावी काइनात की तरफ़ मुतवज्जे हुवा तो वोह (सब) धुवां था, सो इसने उसे (या'नी आस्मानी कुर्रों से) और ज़मीनसे फ़रमाया ख्वाह बाहम कशिशो रग़बत से या गुरेज़ी-व-नागवारी से (हमारे निज़ाम के ताबे') आ जाओ, दोनों ने कहा: हम खुशी से हाज़िर हैं।

12. फिर दो दिनों (या'नी दो मरहलों) में सात आस्मान बना दिए और हर समावी काइनातमें उसका निज़ाम वदीअत कर दिया और आस्माने दुनिया को हम ने चरागों (या'नी सितारों और सय्यारों) से आरास्ता कर दिया और महफूज भी (ताकि एक का निज़ाम दुसरे में मुदाख़िलत न कर सके), येह ज़बरदस्त ग़ल्बा (व कुव्वत) वाले, बड़े इल्मवाले (रब) का मुकर्ररक़र्दह निज़ाम है।

13. फिर अगर वोह रूगर्दानी करें तो आप फ़रमा दें में तुम्हें उस ख़ौफ़नाक अज़ाब से डराता हूँ जो आद और समूद की हलाकत के मानिन्द होगा।

14. जब उनके पास उनके आगे और उनके पीछे

أَنْدَادًا ۙ ذَٰلِكَ رَبُّ الْعَالَمِينَ ۙ ﴿٩﴾

وَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِيَ مِنْ فَوْقِهَا وَبَرَكَ فِيهَا وَقَدَّرَ فِيهَا أَقْوَاتَهَا فِي أَرْبَعَةِ أَيَّامٍ ۖ سَوَاءً لِّلسَّالِفِينَ ﴿١٠﴾

ثُمَّ اسْتَوَىٰ إِلَى السَّمَاءِ وَهِيَ دُخَانٌ فَقَالَ لَهَا وَيَلِ الْأَرْضِ انْتَبِيَا طَوْعًا أَوْ كَرْهًا ۗ قَالَتَا أَتَيْنَا طَآءِيفِينَ ﴿١١﴾

فَقَضَيْنَ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ فِي يَوْمَيْنِ وَأَوْحَىٰ فِي كُلِّ سَمَاءٍ أَمْرَهَا ۗ وَزَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِبَصَائِحَ ۗ وَحَفُّظًا ۗ ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ﴿١٢﴾

فَإِنْ أَعْرَضُوا فَقُلْ أَنْذَرْتُكُمْ صَعِقَةً مِّثْلَ صَعِقَةِ عَادٍ وَثَمُودَ ﴿١٣﴾

إِذْ جَاءَتْهُمْ الرُّسُلُ مِنْ بَيْنِ



(या उनसे पहले और उनके बाद) पयग़म्बर आए (और कहा) के अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो, तो वोह केहने लगे : अगर हमारा रब चाहता तो फरिश्तों को उतार देता सो जो कुछ तुम दे कर भेजे गऐ हो हम उसके मुन्किर हैं।

15. पस जो कौमे आद थी सो उन्होंने ज़मीनमें नाहक़ तकब्बुर (व सरकशी) की और केहने लगे : हमसे बढ़ कर ताक़तवर कौन है? और क्या उन्होंने नहीं देखा के अल्लाह जिसने उन्हें पैदा फ़रमाया है वोह उनसे कहीं बढ़ कर ताक़तवर है, और वोह हमारी आयतों का इन्कार करते रहे।

16. सो हमने उनपर मनहूस दिनों में ख़ौफ़नाक तेज़ो तुन्द आँधी भेजी ताकि हम उन्हें दुन्यवी जिन्दगी में ज़िल्लत के अज़ाब का मज़ा चखाएँ, और आख़िरत का अज़ाब तो सब से ज़ियादह ज़िल्लत अंगेज़ होगा और उनकी कोई मदद न की जाएगी।

17. और जो कौमे समूद थी, सो हमने उन्हें राहे हिदायत दिखाई तो उन्होंने हिदायतके मुकाबले में अँधा रेहना ही पसंद किया तो उन्हें ज़िल्लत के अज़ाब की कड़कने पकड़ लिया उन आ'माल के बदले जो वोह कमाया करते थे।

18. और हमने उन लोगोंको नजात बख़्शी जो ईमान लाए और परहेज़गारी करते रहे।

19. और जिस दिन अल्लाहके दुश्मनों को दोज़ख़की

أَيُّدِيهِمْ وَ مِنْ خَلْفِهِمْ أَلَّا  
تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ قَالُوا لَوْ شَاءَ  
رَبُّنَا لَأَنْزَلَ مَلَائِكَةً فَأِنَّا بِهِ  
أُرْسِلْتُمْ بِهِ كُفْرًا ۝۱۳

فَأَمَّا عَادٌ فَاسْتَكْبَرُوا فِي الْأَرْضِ  
بِعِزِّ الْحَقِّ وَقَالُوا مَنْ أَشَدُّ مِنَّا  
قُوَّةً أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي  
خَلَقَهُمْ هُوَ أَشَدُّ مِنْهُمْ قُوَّةً  
وَكَانُوا بِآيَاتِنَا يَجْحَدُونَ ۝۱۵

فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا صَرْصَرًا  
فِي أَيَّامٍ نَحْسَاتٍ لِنُذِيقَهُمْ  
عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا  
وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَخْزَىٰ وَهُمْ  
لَا يُبْصِرُونَ ۝۱۶

وَ أَمَّا ثَمُودُ فَهَدَيْنَاهُمْ فَاسْتَحَبُّوا  
الْعَنَىٰ عَلَى الْهُدَىٰ فَأَخَذَتْهُمُ  
صَاعِقَةُ الْعَذَابِ الْهُونِ بِمَا كَانُوا  
يَكْسِبُونَ ۝۱۷

وَ نَجَّيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا وَ كَانُوا  
يَتَّقُونَ ۝۱۸

وَيَوْمَ يُحْشَرُ أَعْدَاءُ اللَّهِ إِلَىٰ

तरफ़ जमा' करके लाया जाएगा फिर उन्हें रोक रोक कर (और हांक कर) चलाया जाएगा।

20. यहां तक कि जब वोह दोज़ख़ तक पहुंच जाएंगे तो उनके कान और उनकी आँखें और उन (के जिस्मों) की खालें उनके खिलाफ़ गवाही देंगी उन आ'माल पर जो वोह करते रहे थे।

21. फिर वोह लोग अपनी खालों से कहेंगे : तुमने हमारे खिलाफ़ क्यों गवाही दी, वोह कहेंगी : हमें उस अल्लाह ने गोयाई अता की जो हर चीज़ को कुव्वते गोयाई देता है और उसीने तुम्हें पेहली बार पैदा फ़रमाया है और तुम उसी की तरफ़ पलटाए जाओगे।

22. तुम तो (गुनाह करते वक़्त) उस (खौफ़) से भी पर्दा नहीं करते थे कि तुम्हारे कान तुम्हारे खिलाफ़ गवाही दे देंगे और न (येह कि) तुम्हारी आँखें और न (येह कि) तुम्हारी खालें (ही गवाही दे देंगी) लेकिन तुम गुमान करते थे कि अल्लाह तुम्हारे बहुत से कामों को जो तुम करते हो जानता ही नहीं है।

23. और तुम्हारा येही गुमान जो तुमने अपने रबके बारे में काइम किया, तुम्हें हलाक कर गया सो तुम नुक़सान उठाने वालों में से हो गए।

24. अब अगर वोह सब करें तब भी उनका ठिकाना दोज़ख़ है, और अगर वोह (तौबा के ज़रीए अल्लाह की) रज़ा हासिल करना चाहें तो भी वोह रज़ा पानेवालों में नहीं होंगे।

25. और हमने उन के लिए साथ रेहनेवाले (शयातीन) मुक़रर कर दीए, सो उन्होंने उन के लिए वोह (तमाम बुरे

النَّارِ فَهُمْ يُوزَعُونَ ﴿١٩﴾

حَتَّىٰ إِذَا مَا جَاءُوهَا شَهِدَ عَلَيْهِمْ سَمْعُهُمْ وَأَبْصَارُهُمْ وَجُلُودُهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٢٠﴾

وَقَالُوا لِمَ لُجُودُهُمْ لِمَ شَهِدْتُمْ عَلَيْنَا ۗ قَالُوا أَنْطَقَنَا اللَّهُ الَّذِي أَنْطَقَ كُلَّ شَيْءٍ وَهُوَ خَلَقَكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٢١﴾

وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَتِرُونَ أَنْ يَشْهَدَ عَلَيْكُمْ سَمْعُكُمْ وَلَا أَبْصَارُكُمْ وَلَا جُلُودُكُمْ وَلَكِنْ ظَنَنْتُمْ أَنَّ اللَّهَ لَا يَعْلَمُ كَثِيرًا مِمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٢٢﴾

وَذَلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِي ظَنَنْتُمْ بِرَبِّكُمْ أَرْدَاكُمْ فَأَصْبَحْتُمْ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٢٣﴾

فَإِنْ يَصْدِرُوا فَالنَّارُ مَثْوًى لَهُمْ ۗ وَإِنْ يَسْتَعْتَبُوا فَمَا هُمْ مِنَ الْمُعْتَبِينَ ﴿٢٤﴾

وَقَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَاءَ فَزَيَّنُوا لَهُمْ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَ

आ'माल) खुशनुमा कर दिखाए जो उनके आगे थे और उनके पीछे थे और उन पर (वोही) फ़रमाने अज़ाब साबित हो गया जो उन उम्मतों के बारे में सादिर हो चुका था जो जिन्नत और इन्सानों में से उनसे पहले गुज़र चुकी थीं। बेशक वोह नुक़सान उठानेवाले थे।

26. और काफ़िर लोग केहते हैं : तुम इस कुरआन को मत सुना करो और इस (की किरअत के अवकात) में शोरो गुल मचाया करो ताकि तुम (इनके कुरआन पढ़ने पर) ग़ालिब रहो।

27. पस हम काफ़िरों को सख़्त अज़ाब का मज़ा ज़रूर चखाएंगे और हम उन्हें उन बुरे आ'माल का बदला ज़रूर देंगे जो वोह करते रहे थे।

28. येह दोज़ख़ अल्लाह के दुश्मनों की जज़ा है, उनके लिए इसमें हमेशा रहेने का घर है, येह उसका बदला है जो वोह हमारी आयतों का इन्कार किया करते थे।

29. और जिन लोगोंने कुफ़्र किया है कहेंगे : ऐ हमारे रब ! हमें जिन्नत और इन्सानों में से वोह दोनों दिखा दे जिन्होंने हमें गुमराह किया है हम उन्हें अपने क़दमों के नीचे (रोंद) डालें ताकि वोह सब से ज़यादह जिल्लत वालों में हो जाएं।

30. बेशक जिन लोगों ने कहा हमारा रब अल्लाह है, फिर वोह (इस पर मजबूती से) काइम हो गए, तो उन पर फ़रिश्ते उतरते हैं (और केहते हैं) कि तुम खौफ़ न करो और न ग़म करो और तुम जन्नत की खुशियां मनाओ जिसका तुम से वा'दा किया जाता था।

حَسَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي أُمَمٍ قَدْ  
خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ الْجِنَّةِ  
وَالْإِنْسِ إِنَّهُمْ كَانُوا خَسِرِينَ ﴿٢٥﴾

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَسْعَوْا  
لِهَذَا الْقُرْآنِ وَالْغَوَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ  
تَعْلَمُونَ ﴿٢٦﴾

فَلَنذِيقُنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا عَذَابًا  
شَدِيدًا وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَسْوَأَ الَّذِي  
كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٢٧﴾

ذَلِكَ جَزَاءُ أَعْدَاءِ اللَّهِ الثَّامِرِ  
لَهُمْ فِيهَا دَارُ الْخُلْدِ جَزَاءً بِمَا  
كَانُوا بِآيَاتِنَا يَجْحَدُونَ ﴿٢٨﴾

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا رَبَّنَا أَرِنَا  
الَّذِينَ أَضَلَّنَا مِنَ الْجِنَّةِ وَالْإِنْسِ  
نَجْعَلْهُمَا تَحْتَ أَقْدَامِنَا لِيَكُونُوا  
مِنَ الْأَسْفَلِينَ ﴿٢٩﴾

إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ  
اسْتَقَامُوا تَتَرَّبَّلْ عَلَيْهِمُ الْمَلَائِكَةُ  
أَلَّا تَخَافُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَبْشِرُوا  
بِالْجَنَّةِ الَّتِي كُنتُمْ تُوعَدُونَ ﴿٣٠﴾

31. हम दुनिया की जिन्दगी में (भी) तुम्हारे दोस्त और मददगार हैं और आखिरत में (भी), और तुम्हारे लिए वहां हर वोह ने'मत है जिसे तुम्हारा जी चाहे और तुम्हारे लिए वहां वोह तमाम चीजें (हाजिर) हैं जो तुम तलब करो।

نَحْنُ أَوْلِيَاكُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا  
وَ فِي الْآخِرَةِ وَلَكُمْ فِيهَا مَا  
تَشْتَهُى أَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيهَا مَا  
تَدَّعُونَ ۝۳۱

32. (येह) बड़े बख़्शनेवाले, बहुत रहम फ़रमानेवाले (रब) की तरफ़ से मेहमानी है।

نُزُلًا مِّنْ عَفْوَ رَبِّكَ ۝۳۲

33. और उस शख़्स से ज़यादह खूश गुफ़तार कौन हो सकता है जो अल्लाह की तरफ़ बुलाए और नेक अमल करे ओर कहे : बेशक मैं (अल्लाह और रसूल ﷺ के) फ़रमां बरदारों में से हों।

وَمَنْ أَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَا إِلَى  
اللَّهِ وَ عَمِلَ صَالِحًا وَقَالَ إِنِّى  
مِنَ السُّلِّىِّىْنَ ۝۳۳

34. और नेकी और बदी बराबर नहीं हो सकती, और बुराई को बेहतर (तरीके) से दूर किया करो सो नतीजतन वोह शख़्सके तुम्हारे और जिसके दरमियान दुश्मनी थी गोया वोह गरम जोश दोस्त हो जाएगा।

وَلَا تَسْتَوِى الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ  
إِذْفَعُ بِأَلْتِى هِىَ أَحْسَنُ فَإِذَا  
الَّذِى بَيْنَكَ وَ بَيْنَهُ عَدَاوَةٌ  
كَانَتْهُ وَ لِى حَمِيمٌ ۝۳۴

35. और येह (खूबी) सिर्फ़ उन्ही लोगों को अता की जाती है जो सब्र करते हैं, और येह (तौफ़ीक़) सिर्फ़ उसीको हासिल होती है जो बड़े नसीबवाला होता है।

وَمَا يُكْفِىهَا إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا  
وَمَا يُكْفِىهَا إِلَّا ذُو حَظِّ عَظِيمٍ ۝۳۵

36. और (ऐ बंदे मोमिन!) अगर शैतान की वस्वसा अंदाज़ी से तुम्हें कोई वस्वसा आ जाए तो अल्लाह की पनाह मांग लिया कर, बेशक वोह खूब सुननेवाला खूब जाननेवाला है।

وَإِذَا يَنْزَعَنَّكَ مِنَ الشَّيْطَانِ نَزْعٌ  
فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ ۝ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ  
الْعَلِيمُ ۝۳۶

37. और रात और दिन और सूरज और चांद उसकी निशानियों में से हैं, न सूरज को सजदा किया करो और न ही चांद को, और सजदा सिर्फ़ अल्लाह के लिए किया करो

وَ مِنْ أَيْتِهِ الْبَيْلُ وَ التَّهَارُ  
وَ الشُّسُ وَ الْقَمَرُ ۝ لَا تَسْجُدُوا  
لِلشُّسِ وَ لَا لِلْقَمَرِ وَ اسْجُدُوا لِلَّهِ



जिसने इन (सब) को पैदा फ़रमाया है अगर तुम उसी की बंदगी करते हो।

38. फिर अगर वोह तकबुर करें (तो आप उनकी परवाह न करें) पस जो फ़रिश्ते आपके रब के हुजूर में हैं वोह रात दिन उसकी तस्बीह करते रहेते हैं और वोह थकते (और उकताते) ही नहीं हैं।

39. और उसकी निशानियों में से ये भी है कि आप (पहले) ज़मीनको खुश्क (और बेक़द्र) देखते हैं फिर जब हम उस पर पानी बरसाते हैं तो वोह सर सब्जो शादाब हो जाती है और नुमू पाने लगती है, बेशक वोह जात जिसने इस (मुर्दा ज़मीन) को ज़िन्दा किया है यकीनन वही (रोजे क़ियामत) मुर्दों को ज़िन्दा फ़रमाने वाला है। बेशक वोह हर चीज़ पर ख़ूब क़ादिर है।

40. बेशक जो लोग हमारी आयतों (के मा'ना) में सहीह राह से इन्हिराफ़ करते हैं वोह हम पर पोशीदा नहीं हैं, भला जो शख्स आतिशे दोज़ख़में झोंक दिया जाए (वोह) बेहतर है या वोह शख्स जो क़ियामत के दिन (अज़ाब से) महफूज़ो मामून हो कर आए, तुम जो चाहो करो, बेशक जो काम तुम करते हो वोह ख़ूब देखनेवाला है।

41. बेशक जिन्होंने कुरआनके साथ कुफ़्र किया जबकि वोह उनके पास आ चुका था (तो येह उनकी बदनसीबी है) और बेशक वोह (कुरआन) बड़ी बा इज़ज़त किताब है।

42. बातिल इस (कुरआन) के पास न इसके सामने से आ सकता है और न ही इसके पीछे से, (येह) बड़ी हिक्मत वाले, बड़ी हम्दवाले (रब) की तरफ़ से उतारा हुआ है।

الَّذِي خَلَقَهُنَّ إِن كُنتُمْ إِيَّاهُ  
تَعْبُدُونَ ﴿٣٨﴾

فَإِنِ اسْتَكْبَرُوا فَالَّذِينَ عِنْدَ رَبِّكَ  
يُسَبِّحُونَ لَهُ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ  
لَا يَسْأَمُونَ ﴿٣٩﴾

وَمِنَ الْآيَاتِ أَنَّكَ تَرَى الْأَرْضَ  
خَاشِعَةً فَإِذَا أَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَاءَ  
اهْتَرَّتْ وَرَبَّتْ ۗ إِنَّ الَّذِي  
أَحْيَاهَا لَمُحْيِ الْمَوْتَى ۗ إِنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ  
شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٣٩﴾

إِنَّ الَّذِينَ يُلْحِدُونَ فِي آيَاتِنَا لَا  
يَخْفَوْنَ عَلَيْنَا ۗ أَفَمَنْ يُلْقَىٰ فِي  
النَّارِ خَيْرٌ أَمْ مَنْ يَأْتِيَ آمِنًا يَوْمَ  
الْقِيَامَةِ ۗ اْعْمَلُوا مَا شِئْتُمْ ۗ إِنَّهُ  
بِأَعْمَالِكُمْ بَصِيرٌ ﴿٤٠﴾

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالدِّكْرِ لَمَّا  
جَاءَهُمْ ۗ وَإِنَّ لَهُمْ لَكِتَابًا عَزِيزًا ﴿٤١﴾

لَا يَأْتِيهِ الْبَاطِلُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ  
وَلَا مِنْ خَلْفِهِ ۗ تَنْزِيلٌ مِّنْ  
حَكِيمٍ حَمِيدٍ ﴿٤٢﴾

43. (ऐ हबीब!) जो आप से कही जाती हैं (येह) वोही बातें हैं जो आपसे पहले रसूलों से कही जा चुकी हैं, बेशक आपका रब ज़रूर मुआफ़ीवाला (भी) है और दर्दनाक सज़ा देने वाला (भी) है।

44. और अगर हम इस (किताब) को अज़मी ज़बान का कुरआन बना देते तो यकीनन येह केहते कि इसकी आयतें वाज़ेह तौर पर बयान क्यों नहीं की गईं, क्या किताब अज़मी है और रसूल अरबी है (इस लिए ऐ महबूबे मुकर्रम! हमने कुरआन भी आप ही की ज़बान में उतार दिया है।) फ़रमा दीजिए : वोह (कुरआन) ईमानवालों के लिए हिदायत (भी) है और शिफ़ा (भी) है और जो लोग ईमान नहीं रखते उनके कानों में बेहरेपन का बोझ है वोह उनके हक़ में नाबीनापन (भी) है (गोया) वोह लोग किसी दूर की जगह से पुकारे जाते हैं।

45. और बेशक हमने मूसा (ﷺ) को किताब अ़ता फ़रमाई तो उसमें (भी) इख़्तिलाफ़ किया गया, और अगर आपके रब की तरफ़ से फ़रमान पहले सादिर न हो चुका होता तो उनके दरमियान फ़ैसला कर दिया जाता और बेशक वोह इस (कुरआन) के बारे में (भी) धोका देनेवाले शक में (मुब्तिला) हैं।

46. जिसने नेक अ़मल किया तो उसने अपनी ही ज़ात के (नफ़े' के) लिए (किया) और जिसने गुनाह किया सो (उसका वबाल भी) उसी की जान पर है, और आपका रब बंदों पर जुल्म करनेवाला नहीं है।

مَا يُقَالُ لَكَ إِلَّا مَا قَدْ قِيلَ  
لِلرُّسُلِ مِنْ قَبْلِكَ ۗ إِنَّ رَبَّكَ  
لَذُو مَغْفِرَةٍ وَذُو عِقَابٍ أَلِيمٍ ﴿٣٣﴾  
وَلَوْ جَعَلْنَاهُ قُرْآنًا أَعْجَبِيًّا لَقَالُوا  
لَوْ لَا فُصِّلَتْ آيَاتُهُ ۗ أَءَعْجَبِيٌّ  
وَعَرَبِيٌّ ۗ قُلْ هُوَ الَّذِي أَنْزَلَهُ  
وَأَنزَلَ الْغُرُوبَ ۗ وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ فِي  
أَذَانِهِمْ وَقُرْ ۗ وَهُوَ عَلَيْهِمْ عَمِي ۗ  
أُولَئِكَ يُنَادُونَ مِنْ مَّكَانٍ بَعِيدٍ ﴿٣٤﴾

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَاخْتَلَفَ  
فِيهِ ۗ وَلَوْ لَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ  
رَبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۗ وَإِنَّهُمْ لَفِي  
شَكٍّ مِنْهُ مُرِيبٍ ﴿٣٥﴾

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ  
أَسَاءَ فَعَلَيْهَا ۖ وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ  
لِّلْعَبِيدِ ﴿٣٦﴾